डॉ. पी. एस. पाटील
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर - ४१६ ००४

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि, इस लघु शोध प्रबंध को परीक्षार्थ अग्रेषित किया जाए।

३० जून, १९९५

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

डॉ. के. पी. शहा
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
कोल्हापुर

त था

स्नातकोत्तर अध्यापक, एवं
शोध निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर [महाराष्ट]

प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. शब्बीर हसन काझी ने शिवाजी विश्व विद्यालय को, "एम्. फिल" [हिन्दी]" उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध "जैनेन्द्र के कहानियों में अभिव्यक्त नारी एक अध्ययन" मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्री. शब्बीर हसन काझी के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर

दिनांक :30 जुन १९९५

[डॉ. के. पी. शहा]

शोध निर्देशक

: प्रख्यापन :

"जैनेन्द्र कुमार की कहानियों में अभिव्यक्त नारी एक अध्ययन" लघु शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है। जो एम. फिल. [हिन्दी] उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर

तिथि : ३०-६-१९९५

शोधछात्र

[शब्बीर हसन काझी]

प्राक्कथन

हिन्दी कहानी साहित्य में जैनेन्द्रकुमारजी का स्थान महत्वपूर्ण है। हिन्दी कहानी-जगत में जैनेन्द्रजी की कहानियों की अपनी एक अनोखी दुनिया है। जैनेन्द्रजी हिन्दी के पहले कथाकार है, जिनकी रचनाओंका अन्तर्जगत व्यावहारिक मनोविज्ञान के धरातल पर आधारित है। हिन्दी में सर्व प्रथम जैनेन्द्रजीने ही मानव के अन्तर्मन के संसार को नये मनोवैज्ञानिक सत्यो, तथ्यो, तथा अनुभवों के आधारपर उजागर करने का प्रयत्न किया।

जैनेन्द्रजीने अपनी कहानियों में पाठकों का ध्यान समाज से हटाकर व्यक्तिपर केंद्रित किया। उनकी कहानियाँ पारिवारिक जीवन पति-पत्नी तथा प्रेमी के आत्मीय सम्बन्धो का चित्रण पारिवारिक परिवेश में बडी सफलता के साथ करती है। पति-पत्नी तथा प्रेमी के सम्बन्धो का कलात्मक चित्रण उन्होंने अपनी कहानियों में किया है।

हिन्दी साहित्य पढते समय जैनेन्दजी की कुछ कहानियाँ मुझे पढने मिली। कहानियों के कथानक, घुटन महसुस करने वाले नारी पात्र, विवाहित होते हुए भी पति से प्रेम न करते हुए विवाह पूर्व प्रेमी से संबंध रखनेवाली कहानी की नायिका मौका मिलतेही प्रियकर के साथ भाग जानेवाली नायिका आदि बातो के कारण मेरी जिज्ञासा अधिक बढती गई और मैने सभी कहानियों को पढा। उसके पश्चात उससे प्रभावित होकर उनके साहित्यपर शोध कार्य करने की रुचि निर्माण हुयी। तभी एम्. फिल. के लघुशोध प्रबन्ध के सिलसिले में उनपर शोध कार्य करने का मौका मुझे प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध"जैनेन्द्र कुमार की कहानियों में नारी : एक अध्ययन" में उनकी कहानियों के नारी पात्रों का अध्ययन किया है। प्रबन्ध के आरम्भ में कुछ प्रश्न मेरे मन में उठे -

१] हिन्दी कहानी में जैनेन्द्रकुमार का स्थान।

२] कहानियों मे चित्रित नारीरूप किन-किन प्रकार के है ?

३] कहानियों में चित्रित नारी की समस्याएं कौनसी है ?

४] कहानियों में चित्रित नारी की समस्याएँ क्या है ?

इन सवालों का हल ढूंढने के लिए मैने जैनेन्द्रजी की कहानियों के प्रमुख पात्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में जैनेन्द्रकुमार जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में व्यक्तित्व के अंतर्गत जैनेन्द्रजी का जन्म, बचपन, शिक्षा, माता-पिता भाई बहन शिक्षा एवं साहित्य में पदार्पण, विवाह तथा पारिवारिक जीवन, उनकी लोक प्रियता आदि बातों का विवेचन किया है। "कृतित्व" के अंतर्गत जैनेन्द्रजी की रचना प्रक्रिया तथा उनके साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है।

व्दितीय अध्याय में हिन्दी कहानी साहित्य और जैनेन्द्रजी की कहानियोंकी विशेषताएँ प्रस्तुत की है।

तृतीय अध्याय में जैनेन्द्रजी की कहानियों में चित्रित विभिन्न नारी रूप को चित्रित किया है। जिनमें प्रमुखत: देवी, माता पत्नी, भाभी, बहन, सखी, प्रेयसी, दादी, मामी आदि पात्रों का चित्रण किया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत जैनेन्द्रकुमार जी की कहानियों में चित्रित विविध नारी समस्याओं को चित्रित किया है जो, आर्थिक पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक पिडा से पिडित है।

पंचम अध्याय में जैनेन्द्रकुमारजी की कहानियों में नारी पात्रों की अलग अलग विशेषताएँ लिए हुए पात्रों को लेकर विवेचन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे, वे उपसंहार में रखे है।

प्र प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी गयी है। जिसमें पुस्तकों का प्रकाशन तथा संस्करण भी दिया है।

इस लघु शोध प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करने वाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध श्रध्देय गुरुवर्य डॉ. के. पी. शहा के सूक्ष्म निरीक्षण एवं निर्देशन का परिणाम है। उन्होने इस प्रबन्ध की एक - एक पंक्ति सूक्ष्मता से पढी है। उनकी सूक्ष्म तथा मर्मग्राहिणी मेधासे वह दृष्टि मिली, जिसके द्वारा मैं इस विषय का क्रमबध्द विवेचन प्रस्तुत कर सका। सतत प्रेरणा और सत्परामर्श एवं प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहाय्यता की है। यदि आप बार - बार मुझे सजग न करते तो शायद यह लघु - प्रबन्ध अधूरा रह जाता। आप के शांत गंभीर व्यक्तित्व एवं स्नेहल भाव के कारण यह प्रबन्ध पूर्ण हो सका। आप की उदार एवं स्नेहपूर्ण भावना और कृपायुक्त दिशा - दर्शन के लिए मैं अतीव कृतज्ञ हूँ।

आदरणीय गुरवर्य डॉ. व्ही. के. मोरे, डॉ. पी. एस. पाटील, डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड, प्रा. आय. एम. मुजावर, प्रा. वेदपाठक, प्रा. तिवले,

प्रा. हिरेमठ, प्रा. रजनी भागवत, प्रा. ए. ए. पोतदार जी का आशिर्वाद मेरे साथ रहा, उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

माता - पिता - भाई तथा उनमित्रों का भी आभारी हूँ। जिन की शुभकामनाएँ मेरे साथ रही। जिनका स्वभाव निर्लोभी एवं हितैषी रहा है ऐसे प्रा. एन. आर. रानभरे तथा कु. प्रा. सुरेखा जोशी जी की सहाय्यता का भी आभारी हूँ। मेरे मित्र तथा सहपाठी श्री. राम बोडके, श्री. प्रकाश फडणीस, श्री. किरण मेथे प्रा. सुहास अंगापूरकर प्रा. मारुफ मुजावर, प्रा. प्रदीप सी. लाड, प्रा. मानसिंग टाकळे, प्रा. अनिल मोहिते, श्री. सचीन कलश, श्री. शफीक देसाई, इन सभी का मैं आभारी हूँ जो समय - समयपर मुझे प्रबन्ध - पूर्ति के लिये उकसाते रहे।

शिवाजी विश्व विद्यालय के ग्रंथालय के प्रति आभारी हूँ। इस शोध प्रबन्ध को अतिशीघ्र एवं सुचारु रूपसे टंक लिखित रूप देने का काम करनेवाले - श्री. राजाराम व्ही मोहिते, माया मोहिते जी का भी आभारी हूँ।

भविष्य में भी इन सब लोगों से आशीर्वाद मयी सहयोग की कामना करते हुए समीक्षकों के सामने यह लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करता हूँ।

धन्यवाद

कोल्हापूर।

दिनांक:- ३० जून १९८५

[श्री. शब्बीर काझी]

शोध छात्र